



ॐ नमः श्री वज्रसखाय ॥ ॐ गुर्वश्वसुखसुखं वं वज्रादककममं व
 उद्गं स्वाहा ॥ नैव साधन ॥ ॥ ॐ श्री विष्णुं गुमां ॐ सर्वगथागना
 यथादिगात्मा वं वज्रायिना ॥ तथा दत्ताय विष्णुमिष्टं दिव्यं न वा मि
 ला ॥ ॐ श्रीः सर्वगथागना विष्णुसमस्तियद्गं दं ॥ भावतवैव न ह्यय
 ॥ ॥ ॐ श्रीः कर्मसुखं वं स्वाहा ॥ ॐ नो वाय ॥ ॥ ॐ श्रीः वमनं व
 गिय क स्वाहा ॥ नो वाय ॥ ॥ ॐ काया विष्णुसमस्तियद्गं दं ॥ ॐ

धरतरु बजाचाय सुरत श्री महाविहार

II-38

[illegible]

अथ स्ववर्णिन ॥ ॥ उं गिष्ठवडासनखाहा ॥ आसन ॥ ॥
उं मलिविविजिषीमहायगिसवयवकुमीदू रुद्रखाहा ॥ स्वा
नंनद्रय ॥ ॥ उं सर्वगथागावडागिवकविद्युषेलेखाहा ॥
यगतनिय ॥ ॥ उं वेहायकां ॥ उं आठवडाहमदूं ॥ उं आठ
सर्वविघ्नान्साययदूं ॥ उं आठवडावडाहमदूं ॥ ॥
मदनिय ॥ दानं (ममयमममनाचसहिगं ॥ गीर्वयसमाई

नं. कानिंद्रुदयिपिनिकायनयनं. वीर्यक्रियाहायनं. ध्यानं
कृष्णमकविलकनं. अष्टासनखाहाहा. उं गायत्रिमिताठयः
उवेत्तरगकलाननमपुलं. रावगिकनकवर्णु ॥ सर्वेभोगेः
विमूक ॥ सुनमनूजविशिष्ट. ध्वन्यवद्विफिकाकिः धनकन
कसमृद्ध. जायगनाजवर्ण. सगवत्तगदस्मिन्. मनुर्ल
यठकनामि ॥ उं सुनखसर्ववृद्धाधिष्ठितानाधिष्ठितेखाहा ॥

जीगुनूखानमः॥ ॥ यं वायवाययज्ञा ॥ उं वज्रगन्धस्वा
 हा ॥ उं वज्रसिंधवायस्वाहा ॥ उं वज्रज्ज्ञावर्मप्रतिष्ठस्वाहा ॥
 उं वज्रपृथ्वीस्वाहा ॥ उं वज्रधूपस्वाहा ॥ उं वज्रनेत्रास्वाहा ॥
 ॥ ॥ वंखल्यकीर्ण ॥ उं वज्रवत्सलमयमवः ॥ अष्टदीपायसा
 हितं नानावत्सलमाकीर्णं ॥ ददहं वदयिनं ॥ गुनूखावा ॥ ध
 म् ॥ संधयश्चन (येवव) निश्चिनियामिशिवन, संयर्णवत्सलम

सुर्व ॥ ॥ उं आ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ उं वज्रवत्सलमयमवः ॥ अष्टदीपायसा
 हितं नानावत्सलमाकीर्णं ॥ ददहं वदयिनं ॥ गुनूखावा ॥ ध
 म् ॥ संधयश्चन (येवव) निश्चिनियामिशिवन, संयर्णवत्सलम
 सुर्व ॥ ॥ उं आ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ उं वज्रवत्सलमयमवः ॥ अष्टदीपायसा
 हितं नानावत्सलमाकीर्णं ॥ ददहं वदयिनं ॥ गुनूखावा ॥ ध
 म् ॥ संधयश्चन (येवव) निश्चिनियामिशिवन, संयर्णवत्सलम

उचवनमाधमोयगायनानमः संघायमरुत्वा ॥ प्रित्यापिसन
 गनमस्यामि धर्मकजिनराषित ॥ संघकशीलसंपन्नं चतुः
 यनमा मुने ॥ चतुःपयमजवर्षं सर्वयुतिदिनाम्यर्थं ॥ नूनमा
 ददुगाल्यर्थं वृद्धवालोदधेमनः ॥ आवालोसवर्णयामि वृद्धव
 र्मगालोमं वाधिविरुक्तवाम्भयः स्वयवार्थयुसिद्धयः ॥ इत्या
 दयामिवचवाधिविरुक्तं निमकुयामि ॥ ॐ सर्वसत्त्वान् ॥ ॐ ह्रीं

निश्चयववाधिविरुक्तं वृद्धारुवयं जगतादिनाय ॥ दशनान्सर्व
 यायानां यस्यानानि नमादन् ॥ कृतावास्तवविष्णुमि ॥ अष्टौगमा
 र्जयापधं ॥ कायकं विविधयार्थं वाविकं च चतुर्विधं ॥ विरुजं
 विविधयार्थं गत्सर्वदशयाम्यहं ॥ ॥ ववि ॥ ॐ नमो नमो
 सर्वधर्मा ॥ माशत्रयं नत्वा ॥ ॐ देवि ॥ गृह्ण २ ॥ आवमनं यतिय
 कृत्वा हा ॥ स्नानवाय ॥ ॐ ॥ दाय स्वाहा ॥ ॐ जमाय स्वाहा ॥ ॐ

वरूणयस्वाहा ॥ उँ कृष्णयस्वाहा ॥ उँ अग्नयस्वाहा ॥ उँ न
 अग्नस्वाहा ॥ उँ वायवस्वाहा ॥ उँ नक्षत्रयस्वाहा ॥ उँ वक्र
 नस्वाहा ॥ उँ सूर्ययस्वाहा ॥ उँ वंदायस्वाहा ॥ उँ पृथिवीयस्वा
 हा ॥ उँ नमः ॥ उँ अस्मै ॥ ॥ यज्ञा ॥ उँ गि
 ॥ उँ ॐ नमः ॥ अमहावीर्यं ॥ लोकपालमहद्विको ॥ कीलयन्तु
 नकाष्ठीनी ॥ विष्णुर्गणनमास्तु ॥ ॥ मनुजयना ॥ दमायन

(१२)

॥ विसर्जने ॥ ० ॥ ॐ नमः ॥ उँ मंदवसमा ॥ ० ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ० ॥
 उँ नमः ॥ उँ वक्रमवनाय ॥ समवाहवन्तुमावृद्धा ॥ अर्थ्यादि ॥ सति
 गा ॥ ३ ॥ यो गममृते कनसयाति विष्णुद्विहं ॥ यो अदिदशग
 मननविष्णुद्वदं ॥ उँ गीयी ० मधववर्मदलीवकनार्थ ॥ वन्दसदा
 गुर्वववजिवसानन ॥ अथत्यादिमहावाक्यं ॥ यस्यानन्तसमा
 किं ॥ वन्दगां वजवादी ॥ वक्रमवनायका ॥ देव्यावली

विगदहनत्वा वीवसदावाजिनसर्वगमाया ४१ वकुलनाथासहज
मलायु वेन्दसदासम्भवयोगसावा ॥ ७ कावाकृतिसावसूकानि
नय यमस्यगद्वेयं गत्मव्यवसहसकन्दधवनं वायत्तस
वत्सक ४॥ सर्वहृदविस्मयवृद्धनिलयं दद्यात्सर्वसुन्दरं वेन्द
सहजामलवननर्ति ॥ १॥ सहजादयनायक ४॥ ॥ मेणीक
वामुदितायका ॥ ७॥ स्वरावगुदासर्वधर्मास्वरावगुदाह ॥ ७॥

न्यताहानवजस्वरावात्मकाहं ॥ ७॥ गिगिगुंन्यगानननं वाय
गिगनामगुलायवि सैकावजसुमनं ॥ ७॥ गृहं गाय (गिरिगं
सैकावाधिलिगं गगस्यायविहं कावजविष्टवजं ववठकसूय
कावजकूटागमनकावयं ॥ ७॥ गगस्यायविर्यं कावजविष्टदलय
दं ॥ गृहदवकमलकारिकाकङ्कनाविर्गनतस्य ॥ ७॥ तिकाति
या ४ गमयहं कानवजसस्वस्वयकं नानावाग्निनिचनं गगाव

येन गतं तत्पुनरित्येव गच्छादत्र कवर्जं कष्टदलकमत्र कर्हि कामव्यसि
र्गं मलुलवका निगं निधनं ममानाष्टकमलुगं जगवं विविक्त
रगवर्जं कष्टवर्जं तु मुखं कष्टस्य मत्र कपीनं यमिमुख्यिने
र्गं आलीख्य सनसहिर्गं मद्रोरेव वका निनाया कान्कमानैरवज
वानाश्चालिगिर्गं तु जदयनं वज्रवज्रघञ्जिर्गं द्वितीयं तु जद
यनं गजवन्मन्त्रवचनं तृतीयं ज्ञापयन् तु जदयनं तु मन्त्रवत्

ज्ञापनं चतुर्थं ज्ञापयन् तु जदयनं कर्हि कया सध्वं यंच मन्त्रय
न तु जदयनं यनं तु या सध्वं षष्ठं मन्त्रयन् तु जदयनं प्रिष्टुनव
क्रमं तु ध्वं ॥ रुद्रा मन्त्रं तृतीयं कया न मासान्दुर्गं सध्वं ॥ ग
द्वर्जदध्वनिर्धं विष्टवज्रा कान्कमोतिर्नं विकृता ननं मद्रोरेव
तृतीयं ज्ञेयं नादिनं सान्निर्गं या प्रचर्म निवर्जानं साधनं वसिन्
माना ११ गदध्वनिर्धं कर्हि कान्कवत्तुलमखला गिता मधि

अमिगं कृष्णयवीनिर्गन्धमिषुमूदायकीर्तिगंषघ्रावमिषाविशु
 द्विनागस्यायंगोरगवगीनकूवह्मपकमूषादिरुजायिनंगामकूक
 म्मनम्लावतुमतिगमखला वामरुजातिनिर्गकयावचइष्टमाना
 असिक्थनादकील्लगज्जयनिदिशसर्वाद्रुग्गन्निवर्गिकवकल्या
 ग्रीवमरुगजाश्रुवनिर्घिनमूषीजघादयेनसमावेष्टनायकठम
 हासूखकत्रुष्मकाशीरुत्काईं ॥ ॥ ग्रीकायेनवदमंउनं ॥

अकावर्षसूर्यमधुनंजावजयग्राहकाइहं ॥ ॥ कवसाधनाउंरु
 नमहि स्वाहाइ वागठरुइरुहाइरुइरुइ ॥ ॥ उवंसार्था
 किमीरुकिइरुइरुइ ॥ ॥ ग्रीगनासउंरुइरुइदयनमःहि न
 लाट स्वाहाइमिवाया वागठरुइरुइदयनमःहि न
 सर्वाइव ॥ ॥ उवंनाहो सार्थाइदय डीमीवक रुकि ललाट
 इरुमिनिग रुइरुइसर्वाइव ॥ ॥ उंशिवजह रुइरुइकइरुइरुइ

किनिजातसंवर्षादा॥गंवापिछान॥ ॥उंखगुनाहृदं॥व
जयस्वस्वादा॥पृथापिछान॥ ॥उंमनुकवाटकभुन्यंहावेयगु
कंकावधकपांनंमकावधमामकी॥नृष्यदक्षरुजापकमूवापिने
जा॥खभवाधीकृशसर्व॥कपावकृतिसधर्जगथाधंथा॥नवमनुवः
वनयदा॥हृटकाधनपाजंवरवर्षागिसकमभुन्यं॥सुलमृद्वीष्ण
व॥गधयमीवाहृनकनं॥नवयोवनसंयन्ता॥पिनगोहृवसुदनी

॥हृहादी॥हृकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
गाव॥मृग्राकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
गलीराय॥जगु॥उं॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
वृषी॥मृग्राकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
उं॥खगुनाहृदं॥मृग्राकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥
मृहृहृहृहृ॥उं॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥हृहाकारंरुवगवर्ष॥



यवाकविरुवजकीलयहंरुद्र॥ उं वज्रमूकलवजकीलाकाठयहं
रुद्र॥ मरुतस्त्वलानविनयम्॥ कालावलीवजावलीषावलीषुहं
ह्यादिदिगवंधनयंजोउं क्र॥ गलादमाकाउं गिकाकलंकादियमुता
हनसिमकु॥ यी॥ जययी॥ हं॥ रुगाय रुगहं॥ रुन्दाय रुन्दहं॥ म
लाय कामलाय कहं॥ सागनाय समानहं॥ स्वहृदि ह्रीं काववलिमू
द्रासह्ययमूकनिष्ठुवनस्त्रिगमनादिसंतिद्धिणीवज्रसंववमाउ

[illegible]

हृद् ॥ उं विस्मयक नाटक हृद् ॥ उं स्म विस्मयक नाटक हृद् ॥ उं क
वश्यवन्द हृद् ॥ उं कृत्स्न वन्द हृद् ॥ उं वन्द्य वन्द हृद् ॥ उं वन्द्य वन्द हृद् ॥
य हृद् ॥ उं गानय श्रमदानास हृद् ॥ उं कारुण्य श्रवीतमनीय हृद्
॥ उं कौशवतीय हृद् ॥ उं कृत्स्न कौशवतीय हृद् ॥ उं कृत्स्न
दुमकाय हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं नलावगीय हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
य हृद् ॥ उं यव श्रवायव ग हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥

मिनसनारुकीय हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
गङ्गाय श्रममादवीव हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
हृदयक हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
नीय हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥
उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥ उं हृद् ॥

सहं २२॥ उं उलकास्यहं २२॥ उं ज्ञानास्यहं २२॥ उं सुकास्य
हं २२॥ उं यमदानीयहं २२॥ उं यमदानीयहं २२॥ उं यमदक्ष
नीयहं २२॥ उं यममथनीयहं २२॥ उं वल्लभहं २२॥ उं गः
कनखिवहं २२॥ उं कालाकलहं २२॥ उं कनकलीयलायहं २२॥
॥ उं कः हट्टासहं २२॥ उं तस्मीवनरुणासनीयहं २२॥ उं घाली
यकानायहं २२॥ उं कितिकितानवहं २२॥ ॥ उं सनतिगविरु

सनमामिगं गहं वं हाकसमां गतिनाथहावजपूर्यं यगी कृत्वाहा ॥ ॥
यं वायवावयुजा ॥ ॥ लास्या ॥ उं वज्रसखसं गग ४ वज्रवत्तमनरुन
वज्रधर्मग्रावन वज्रकर्मकृत्वा एव ॥ उं वज्रवेनहं ॥ उं वज्रवेलाया ॥
उं वज्रमदी (गडी) ॥ उं वज्रमूर्ति ॥ उं वज्रहासहं ॥ उं वज्रलासया ॥ उं
वज्रगीगडी ॥ उं वज्रनग ॥ उं वज्रपूर्यहं ॥ उं वज्रधूपणी ॥ उं वज्र
वनाके डी ॥ उं वज्रगले ॥ उं वज्रदले ॥ उं वज्रवसणी ॥ उं वज्रस्य

[illegible][illegible]

वत्यनष्टसूत्राय कलिं वद शखत्वांगया (भा) ह्रस्वद्वयमाधु। कयी
नया गुणवत्पुस्तकं दिष्टं ॥ (भा) रुमाने मदा मोसमदा धेने, आयिने
मोहिने ह्यनिनधीधने, यो दध्मदा द्ववकी, निनगम्यविगनमा भव
ली ह्रस्वर्षीणी षर्षी, ना षर्षीणा वसंसा वका का वसमा वर्षीमा वविदाय
सम्यग्गसखीनम ॥ ॥ मन्त्रगणने ॥ उं नमो रुगवत्की वज्राय हुं ॥
उं महाकल्याणि सनिगय हुं ॥ उं उदामकृष्णाय हुं ॥ उं
दंष्ट्रकनागरी षट्मखाय हुं ॥ उं सहस्ररुद्रराखवाय हुं ॥

हुं ॥ उं यत्र शुभा (भा) शगिष्ठा वखत्वांगभा वि (ष) हुं ॥ उं व्याघ्र
किनाम्यवधवाय हुं ॥ उं महाधूर्माधका ववपूषाय हुं ॥
॥ ॥ रुद्रयज्ञा ॥ वामकवगलं न्यक्ता वयम् ॥ शुभगानेन कवीन
कृपं वद वयमाय विगवद्दयं, सूर्यमंद ववका न, वका वयविष्णु
भनकलिं कलियविष्णुमनवज्रवावाही समाधु नयं ता वयं ॥ उं
ववज्रवावाही य हुं ॥ उं क्रीयां यामिनी य हुं ॥ उं क्रीमां मा
हनी य हुं ॥ उं हं किं संचावपी य हुं ॥ उं हं ह्रीं ता सना य

न्यादियसुदया. सकयातखलंगर्धन. दक्षि (सदमहकलिका) ॥ १ ॥
न्याकवृक्षात्मानः पिषाणुकखलावक ॥ १ ॥ दक्षकल्याणिगञ्जान
मस्तुयागिणीगले ॥ ०० ॥ किकवृक्षा ॥ ॥ ॥ कर्तकाविगमनूमादि
गमयेमखिलनिहिगनिखिलदाया ॥ ॥ ॥ दक्षयामियत्रगठपूनन
कवणसम्भवविदधे. आवकखड्गजिनारुम. जिनसूतसंरुमानि.
कूडलानिग्नूमादिगानि. वायोसंम्यकविष्णमयाममवठजिनवला
दिपुयंजवर्णगगानि. सर्वरावनवायोविलुविदधे. जूवृक्षमा

ज्ञानथामवर्ण ॥ ०० ॥ द्यादियागा ॥ ॥ ॥ मकूटलावना ॥ ०० ॥
सकमहावर्ज ॥ ०० ॥ पिषाणुकनमस्तुगं ॥ १ ॥ दक्षमिस्ववृक्षानी. पिषुआल
यसंशुर्व ॥ ॥ ०० ॥ दक्षसर्ववृक्षानी. यस्माकंयूजनायवमकूटपंच
कूवांरुव. सववृक्षवागामविमहामकूटयमीयठदं ॥ ०० ॥ वज्रभाग
ध्वजध्वनीगुरुपिच्छदं ॥ सत्ववजीगुरुपिच्छदं ॥ वलवजीगुरुपि
च्छदं ॥ धर्मवजीगुरुपिच्छदं ॥ कमावजीगुरुपिच्छदं ॥ ०० ॥
दकमकूटवज्रघठनामाचार्यमुकुटवृक्ष ॥ ॥ ॥ खानवाय ॥ ०० ॥

यवे वाचनाय स्वाहा ॥ अक्रायाय स्वाहा ॥ त्रक्षसकृवाय स्वाहा ॥ न
मृता राय स्वाहा ॥ नृमाघसिद्धय स्वाहा ॥ ताचनाय स्वाहा ॥ मामकी
य स्वाहा ॥ पाठलाय स्वाहा ॥ नावाय स्वाहा ॥ ॥ पूजा ॥ उमि ॥ उं न
मरु यक्षवृक्षानी ॥ अक्रायादि कृता वनिशमयवे वाचन नार्थ ॥ यक्ष
वृक्षे नमस्तुते ॥ ॥ जाय ॥ ॥ पूजा ॥ उं नृगवान्मवज विद्या नाजान
मास्तुते ॥ कस्तुमिच्छाम्यहं नाथ ॥ मण्डलं कलनात्मकं ॥ शिष्यान्मन
कं पाय ॥ यस्माकं पूजनाय च ॥ गत्मेह कस्तुमिच्छाम्यहं नाथ ॥

शि ॥ समन्वाह वस्तुमावृद्धा ॥ जगवज्रक्रियाथदा ॥ हस्तबाधोपि सत्वा
द्य ॥ यावान्यामय देवता ॥ देवता लोकपाया ॥ हस्तासम्बाधिसा सना
सा सनाशिवता सत्वा ॥ यवान्यदिवा वक्षुष ॥ अमकवजना मावाय ॥
सानिध्विकस्तुमिह ॥ ॥ पूजा ॥ उमि ॥ ॥
देवपूजा ॥ जाय पूय ॥ खानवाय ॥ पूजा ॥ वन ॥ शिष्य ॥ ऊरुम ॥ खान ॥ ने
वय ॥ पू ॥ म ॥ नाय ॥ उमि ॥ ॥ वति ॥ उं नृगवान्मवज विद्या नाजान
न ॥ लं कालनाग्निर्मंडनं ॥ कं काललपिमर्द ॥ अक्रावलययद्गणजनं ॥

[illegible][illegible]

पुष्पदन्तः स्वस्ति वा वज्रगामाः स्वस्ति यन्मन्त्रं गयूषं ॥ स्वस्ति वा जोष
स्ति दिवा स्वस्ति मन्त्रादि न हितं सर्वं यत् स्वस्ति वा राहु मावे यो या यमा
गमनं ॥ सर्वं सत्त्वं सर्वं पाप्मं सर्वं रूपाद्यं कं व वाध सर्वं व स खिन स
सत्त्वं सर्वं सत्त्वं नित्रामया ॥ सर्वं रुद्राधियन्त्रं माकाश्चिन्त्या यमा
गमनं यानि रुद्राणि समागता निहिति नानि रुद्रावथवा कविष्य
कूर्वा मे जीवतर्कं यज्ञाह दिवा वराशो व व न कुधर्ष ॥ ० ॥ वा
स्वस्ति नमः पूर्व यन्त्रं यदि दीपायना सनः ॥ आयदा हवर्गं निर्गन्त्र

स्वस्ति नमः सर्वदा ॥ ^{स्वस्ति} यन्त्रं दत्तं यत्र मन्त्रं नाना वक्तव्यं विगर्ह
ददाति यत्र मन्त्रं कृत्वा यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥ गजमन्त्रं दत्तं यत्र मन्त्रं
यन्त्रं नाना यन्त्रं मन्त्रं विगर्ह ददाति यत्र मन्त्रं कृत्वा यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥
॥ स्वान्नं नेत्रं दत्तं यत्र मन्त्रं कृत्वा यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥ यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥
न ददाति यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥ न दत्तं ॥ दत्तं यत्र मन्त्रं धूर्यं नाना यन्त्रं यन्त्रं
स्वस्ति ददाति यत्र मन्त्रं कृत्वा यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥ यन्त्रं गृह्णीयथा सर्वं ॥
स्वस्ति नमः दीपदानं माय हं ॥ (स्वस्ति) कया मन्त्रं यन्त्रं सार्कं सर्वज्ञान
यन्त्रं कथं ॥ मन्त्रं ॥ ० ॥